International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

अर्चना अटवाल[*] डा०शैल ढाका[2]**
शोधार्थी [1*] शोध निर्देशिका[2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड—टू—बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

सारांश

शिक्षक वह प्रमुख व्यक्ति है जो कई बाधाओं के बावजूद विद्यार्थियों में सभी आवश्यक मूल्यों को विकसित कर सकता है। मूल्य वह साधन हैं जो शिक्षकों को अद्वितीय बनाने का गुण रखते हैं। वर्तमान अध्ययन मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों पर केंद्रित है। अध्ययन वर्णनात्मक है और मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को अध्ययन के लिए जनसंख्या के रूप में लिया गया है। शोधार्थी ने मेरठ जिले के 100 शिक्षकों का न्यादर्श लिया है। मूल्यों का अध्ययन छह मूल्यों के माध्यम से किया गया है, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैद्धांतिक और सौंदर्यपरक। शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन के संचालन के लिए जी.पी.शैरी एवं आर.पी.वर्मा द्वारा विकसित मूल्य सूची का उपयोग किया। पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के मूल्यों के बीच सार्थक अंतर पाया गया है।

कुंजी शब्द— मूल्य, माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक

प्रस्तावना

मनुष्य उन जीवों में से एक है जिसने अपनी बुद्धि, गुणों व मूल्यों के बल पर खुद को पशु जगत से अलग किया है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो उसे सद्गुण प्राप्त करने और एक इंसान बनने में सक्षम बनाती है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को एक फूल की तरह विकसित करती है जो अपनी सुगंध पूरे वातावरण में फैलाता है। शिक्षक वह प्रमुख व्यक्ति है जो कई बाधाओं के बावजूद छोटे बच्चों में सभी आवश्यक मूल्यों को विकसित कर सकता है। यह कार्य आसान हो जाएगा यदि शिक्षक अपने व्यक्तिगत चरित्र और कार्यों से अपने विद्यार्थियों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करे। मूल्य वह साधन हैं जो शिक्षकों को अद्वितीय बनाने का गुण रखते हैं। मूल्य **'मूल्य को परखने के मानक और सिद्धांत हैं।'** वे मानदंड हैं जिनके द्वारा हम चीजों (लोगों, वस्तुओं, विचारों, कार्यों और स्थितियों) को अच्छा मानते हैं'। मूल्य व्यवहार के सिद्धांत या मानक हैं, जीवन में क्या महत्वपूर्ण है इसका निर्णय स्वयं करें।

मूल्य व्यवहार के सिद्धांतों या मानकों का एक समूह है जिन्हें समाज द्वारा वांछनीय, महत्वपूर्ण और उच्च सम्मान में रखा जाता है। मूल्य अमूर्त आदर्श हैं जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं और किसी विशिष्ट दृष्टिकोण, वस्तु या स्थिति से बंधे नहीं होते हैं जो आचरण के आदर्श मॉडल और आदर्श अंतिम लक्ष्यों के बारे में किसी व्यक्ति की मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। **'जो कुछ भी मनुष्य को संतुष्ट करता है वह मूल्य है'**। मूल्य के एक अन्योन्याश्रित, स्वीकृत और सुसंगत सेट को 'मूल्य प्रणाली' कहा जाता है। मूल्यों का विकास आवश्यकताओं, धारणा, भावनाओं व दृष्टिकोण की परस्पर क्रिया से होता है। मूल्यों को एक ऐसे प्रयास के रूप में अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है, जो प्रणालीगत, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक जरूरतों को पूरा करता है।

मूल्य एक स्वस्थ, सशक्त और आनंदमय जीवन के बुनियादी मानवीय हितों को बढावा देते हैं, बौद्धिक एवं सौंदर्यपूर्ण खोज, एक उन्नत नैतिक विकास और अंतत: आध्यात्मिक पूर्ति में मदद करते हैं।

मूल्यों की शिक्षा एक ऐसी गतिविधि है जिसके दौरान लोगों को स्कूलों, घरों, क्लबों और धार्मिक व अन्य युवा संगठनों में उचित रूप से योग्य वयस्कों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, ताकि वे अपने दृष्टिकोण में अंतर्निहित मूल्यों को स्पष्ट कर सकें, अपने और दूसरों के दीर्घकालिक कल्याण के लिए इन मूल्यों की प्रभावशीलता का आकलन करना और अन्य मूल्यों पर विचार करना और उन्हें प्राप्त करना जो अल्पकालिक और दीर्घकालिक कल्याण के लिए अधिक प्रभावी हैं।

मूल्य शिक्षा एक शब्द है जिसका उपयोग कई चीजों के नाम के लिए किया जाता है, और इसे लेकर बहुत सारे शैक्षणिक विवाद हैं। कुछ लोग इसे उस प्रक्रिया के सभी पहलुओं के रूप में मानते हैं जिसके द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों तक मूल्यों का संचार करते हैं। अन्य लोग इसे एक ऐसी गतिविधि के रूप में देखते हैं जो किसी भी संगठन में हो सकती है, जिसके दौरान लोगों को दूसरों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जो अधिक उम्र के हो सकते हैं, अधिकार की स्थिति में हो सकते हैं या अधिक अनुभवी होते हैं, ताकि उनके व्यवहार में अंतर्निहित उन मूल्यों को स्पष्ट किया जा सके, ताकि उनकी प्रभावशीलता का आकलन किया जा सके। इन मूल्यों और संबंधित व्यवहारों को अपने और दूसरों के दीर्घकालिक कल्याण के लिए और अन्य मूल्यों और व्यवहारों को प्रतिबिंबित करने और प्राप्त करने के लिए जिन्हें वे स्वयं और दूसरों के दीर्घकालिक कल्याण के लिए अधिक प्रभावी मानते हैं।

भारत सरकार वर्तमान में शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्यों की शिक्षा पर अपने स्वयं के प्रकाशनों और स्कूल मंचों के वित्तपोषण के साथ, अपने स्कूलों में मूल्य शिक्षा को वित्तपोषित करती है। भारत में सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में नैतिक और नागरिक शास्त्र शिक्षा कार्यक्रम सिखाने के लिए पाठ्यक्रम हैं। मूल्यों की शिक्षा भारतीय स्कूलों का एक हिस्सा है, जबकि औपचारिक पाठ्यक्रम छात्रों को छात्र भागीदारी का अभ्यास करके सक्षम लोकतांत्रिक नागरिक बनने के लिए शिक्षित करने के बारे में है, गुणात्मक अध्ययनों से पता चला है कि रोजमर्रा के स्कूली जीवन में, मूल्यों की शिक्षा और स्कूल लोकतंत्र अक्सर पारंपरिक अनुशासन तक सीमित हो जाते हैं। विद्यार्थियों को वैश्वीकरण के प्रभावों के लिए तैयार करने के लिए छात्रों के लिए उपयुक्त एक पाठ्येत्तर गतिविधि के रूप में व्यावहारिक मूल्यों का पुनरुद्धार हुआ है।

शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक की भूमिका बच्चे को सही रास्ते पर लाना और उसे देखकर, सुझाव देकर और मदद करके उसके विकास में प्रोत्साहित करना है, लेकिन थोपना या हस्तक्षेप करना नहीं। इस बात पर जोर दिया जा सकता है कि शिक्षक, शिक्षाकर्मी, शिक्षक, पर्यवेक्षक, प्रशासक और सबसे बढ़कर माता–पिता को मूल्य उन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए। शिक्षकों की भूमिका की गंभीरता अच्छी तरह से स्थापित है और व्यापक रूप से स्वीकार की गई है। उन्हें पेशेवर रूप से तैयार करना होगा और मूल्य संवर्धन में उनकी भूमिका को आत्मसात करना होगा। परंपरागत रूप से शिक्षकों को जाति का पथप्रदर्शक और इतिहास का निर्माता

माना जाता है। हालाँकि इस संबंध में उनकी भूमिका कम हो गई है फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि वे बच्चों पर अपना काफी प्रभाव डालते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का महत्व

वर्तमान परिदृश्य में एक आधुनिक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक के सामने बडी चुनौती यह है कि 21वीं सदी—उन्नत प्रौद्योगिकी के युग—के किशोरों के लिए मूल्य शिक्षा और मूल्य पैटर्न प्रणाली को प्रभावी और दिलचस्प कैसे बनाया जाए। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार और अच्छे शिष्टाचार थोपने की मांग समय—समय पर उठती रहती है। यह तभी संभव होगा जब माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने विद्यार्थियों के समक्ष नैतिक मूल्यों के आदर्श बनें। मेरठ शहर के साथ—साथ दूर—दराज के इलाकों में भी कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान हैं। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मौजूदा मूल्य पैटर्न की जाँच करने की सख्त आवश्यकता है ताकि छात्रों की भाषा में अनावश्यक कठोरता और उनके व्यवहार में अशिष्टता को दूर करने के लिए अच्छे संस्कार डाले जा सकें। इसीलिए यह अध्ययन छात्रों में अच्छे और नैतिक मूल्यों के विकास की प्रभावशीलता के संबंध में पूरी तरह से महत्वपूर्ण है। शोधकर्ता मौजूदा स्थितियों और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्य पैटर्न के स्तर का पता लगाने की कोशिश कर रहा है ताकि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों/किशोरों में मौजूदा मूल्य आधारित शिक्षा में सुधार के लिए समान उपचारात्मक उपाय सुझाए जा सकें।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन सम्बन्धित अनुसंधान को अधिक स्पष्ट रूप प्रदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अनुसंधान कहाँ तक व किस स्तर तक सम्भव हो पाये है तथा कौन से स्तर छूटे हुए हैं। यह अनुसंधान को स्थूल रूप से सूक्ष्म रूप में पहुँचने के प्रयासों की सार्थकता प्रदान करता है।

कुमारी (2001) ने पाया कि 'शहरी पुरुष शिक्षक एवं ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के मूल्यों की तुलना' में अधिक नैतिक थे और पुरुष शिक्षकों ने महिला शिक्षकों की तुलना में सौंदर्य, राजनीतिक और सामाजिक मूल्यों में बेहतर अंक हासिल किए, जबकि शहरी महिला शिक्षक आर्थिक और सामाजिक मूल्यों को प्राथमिकता देते थे। ग्रामीण महिला शिक्षक सौंदर्यवादी, सैद्धांतिक और धार्मिक थीं। ग्रामीण महिला शिक्षकों में शहरी महिला शिक्षकों की तुलना में नैतिकता की भावना अधिक थी।

कुमारी, एल. वी. (2005) ने 'पुरुष और महिला शिक्षकों ने सैद्धांतिक मूल्य और सम्बद्धता' विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया। उन्होंने अपने शोध के निष्कर्ष में पाया कि पुरुष और महिला शिक्षकों ने सैद्धांतिक मूल्य और सम्बद्धता की आवश्यकता के लिए उच्च प्राथमिकता व्यक्त की। पुरुष शिक्षकों ने महिला शिक्षकों की तुलना में सौंदर्य संबंधी राजनीतिक और सामाजिक मूल्यों में बेहतर अंक प्राप्त किए। शहरी पुरुष शिक्षक ग्रामीण पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक नैतिक थे और शहरी महिला शिक्षक सौंदर्यवादी और धार्मिक थीं। ग्रामीण महिला शिक्षकों में शहरी महिला शिक्षकों की तुलना में नैतिकता की भावना अधिक थी।

शर्मा, उदयवीर (2015) ने 'माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मध्य मूल्यों का अध्ययन' विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य लखनऊ में सरकारी और गैर—सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों

के बीच विभिन्न मूल्यों की तुलना करना है। स्कूलों और शिक्षकों का चयन यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग करके किया गया था। 140 शिक्षकों का चयन किया गया, यानी 70 सरकारी स्कूलों से और 70 गैर—सरकारी स्कूलों से। इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली था जिसे डॉ. (श्रीमती) जी.पी. शेरी और डॉ. आर.पी. वर्मा द्वारा विकसित किया गया था। अधिकांश सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। शिक्षकों के दोनों लिंगों में लोकतांत्रिक, सुखवादी मूल्य में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। महिला शिक्षकों में सौंदर्य एवं आर्थिक मूल्य महत्वपूर्ण पाया गया। यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में मूल्य संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण है जो जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और समाज को भी प्रभावित करती है।

कुमार (2016) ने 'हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षुओं मध्य मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक पर अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण और शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं की अब तक लगभग एक ही तरह की धारणा है। जहां तक धार्मिक मूल्य, सौंदर्य मूल्य और स्वास्थ्य मूल्य का संबंध था। औसत स्कोर के आधार पर ग्रामीण महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं में शहरी समकक्षों की तुलना में मूल्यों के प्रति अधिक झुकाव दिखाई देता है। पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक मूल्य के साथ—साथ स्वास्थ्य मूल्य के बीच सकारात्मक सह—संबंध मौजूद है।

शौकीन बिलाल अहमद (2017) ने 'शिक्षक और मूल्य शिक्षा—एक अन्वेषणात्मक अध्ययन' पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। समकालीन भारतीय समाज में मूल्य संकट हमारे जीवन के सभी कोनों पर अपनी बुरी छाया डाल रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में आधी सदी से अधिक की प्रगति के बाद भी, हमारा समाज विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है, उनमें से एक है मूल्यों का क्षरण। इस प्रकार की समस्याएँ हमारे विकास के साथ—साथ हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर भी प्रश्न चिन्ह लगाती हैं कि हम किस दिशा में प्रगति कर रहे हैं—भौतिक या आध्यात्मिक या दोनों में। यह स्थिति दर्शाती है कि आध्यात्मिक विकास भौतिक पहलू से पिछड़ रहा है। मूल चिंता यह है कि हम इस समस्या से कैसे पार पा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज और विद्यालय की जिम्मेदारी समान रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन मूल्यों के विकास में बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है। यह शिक्षक ही है जिसका व्यक्तित्व विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विद्यार्थियों को आदर्श के रूप में प्रभावित करता है। छात्र उनके द्वारा पढ़ाए गए पाठों की तुलना में शिक्षकों से मूल्य सीखते हैं। इस चिंता में इस मांग को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षा को पुनर्विन्यास की आवश्यकता है। यह शोध पत्र शिक्षक और मूल्य उन्मुख शिक्षा के समर्थन में तर्क प्रदान करता है। पेपर इस अभिविन्यास में विभिन्न व्यावहारिक मुद्दों पर भी विचार करता है और उपचारात्मक उपाय सुझाता है।

चम्याल, देवेन्द्र सिंह, भीमा मनराल (2020) ने 'वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। वर्तमान जांच में अल्मोडा जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच व्यावसायिक मूल्यों की तुलना की गई है। वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या में अल्मोडा शहर के सभी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल हैं। तीन सरकारी और तीन निजी स्कूलों

को यादृच्छिक रूप से चुना गया और 60 शिक्षकों का नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रासंगिक डेटा एकत्र करने के लिए टीचर्स प्रोफेशनल वैल्यू स्केल, डॉ. पी.सी. द्वारा निर्मित। शुक्ला, गोरखपुस विश्वविद्यालय (यूपी) के डब्ल्यू.एन. जॉन का उपयोग किया गया है। पैमाने का विश्वसनीयता गुणांक 0.86 था। वर्णनात्मक आँकडों का उपयोग किया गया। माध्य, मानक विचलन, टी—मान की गणना की गई। $p<0.01$ और $p<0.05$ पर अंतर के महत्व को जानने के लिए टी—परीक्षण का उपयोग किया गया था।

यादव, विश्वजीत एवं सिकंदर मंदिरा (2021) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए मूल्य संवर्धन प्रथाओं का एक अध्ययन' भारत सांस्कृतिक विरासत में समृद्ध है और एक प्राचीन सभ्यता वाला देश है जो अपनी अच्छी तरह से परिभाषित शिक्षा प्रणाली के लिए जाना जाता है। प्रोफेसर फैंसी के अनुसार शिक्षा को छात्रों के भविष्य के कल्याण को सुनिश्चित करने के एक साधन के रूप में माना जाता है, शिक्षा अनुभव को ध्यान में रखने की प्रक्रिया है, व्यक्तिगत अनुभव को बढ़ाकर इसे अधिक सामाजिक मूल्य प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति को अपनी शक्तियों पर बेहतर नियंत्रण मिलता है। मूल्य शिक्षा को शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का अभिन्न अंग होना चाहिए और इसे शिक्षा के एक अलग हिस्से के रूप में प्रदान नहीं किया जा सकता हैय संपूर्ण शिक्षा मूल्योन्मुख होनी चाहिए। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य एकीकृत एवं संतुलित व्यक्तित्व का विकास करना है। मूल्य प्रकृति में पैदा नहीं होते। उन्हें अर्जित किया जाता है और आत्मसात किया जाता है। शिक्षा मूल्यों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है और इसमें शिक्षार्थियों में एक—दूसरे की देखभाल, सहयोग और सम्मान विकसित होना चाहिए। हमारी शैक्षिक नीतियों और पाठ्यक्रम की रूपरेखा ने मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया है, सह—पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ स्कूली छात्रों में मूल्यों को विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस शोधपत्र में शोधकर्ता इस बात पर चर्चा करते हैं कि स्कूल के छात्रों के बीच सह—पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों के माध्यम से स्कूल के शिक्षकों द्वारा किए गए मूल्य संवर्द्धन अभ्यास कैसे किए जाते हैं।

समस्या कथन—

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

मूल्य हमारी संपूर्ण जीवन शैली व व्यवहार को निर्धारित करते हैं। किसी मनुष्य के मूल्य के आधार पर हम उसके वर्तमान और उसके आने वाले कल के समय के अनुमानित कार्यों के बारे में जान सकते हैं। वास्तु में मूल्य अमूर्त सम्प्रत्य है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष से होता है। मानव के मूल्य आदर्शवादी अर्थात आध्यात्मिक हो या व्यवहारिक, परमार्थिक हो या नैतिक, यह मानव को एक आदर्श प्राणी बनाने में सहायक होते हैं, क्योंकि मूल्य समाज के आदर्शों, आवश्यकता और मानको द्वारा निर्धारित होते हैं। मूल्यों के आधार पर ही व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्यों का निर्धारण करके उनको प्राप्त करने का प्रयास करता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं—

1- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

3- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के राजनीतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

4- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन करना

5- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

6- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सौंदर्य मूल्यों का अध्ययन करना।

7- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

1- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के राजनीतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सौंदर्य मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

7- माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

शोध अध्ययन प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने लक्ष्य को निर्धारित करते हुए **'वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि'** का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए मेरठ जिले के 5 सरकारी और 05 निजी माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों (50 पुरुष और 50 महिला) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

शोधार्थी ने जी.पी.शैरी एवं आर.पी.वर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक मूल्य सूची का उपयोग किया।

शोध परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जिले के विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक शिक्षकों तक किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के सन्दर्भों में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रविधि जैसे— मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों की साख्यिकीय गणना के पश्चात् निम्नवत् परिणाम प्राप्त हुए है—

तालिका सं०— 1
माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के औसत अंकों की तुलना

मूल्य	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी—मान
धार्मिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	86.04	3.75	0.605	4.76
	महिला शिक्षक	50	88.92	2.06		
सामाजिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	100.20	7.75	1.450	2.51
	महिला शिक्षक	50	96.56	6.71		
राजनीतिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	82.95	13.41	2.363	2.07
	महिला शिक्षक	50	78.05	9.97		
आर्थिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	84.96	10.45	1.879	0.94
	महिला शिक्षक	50	83.19	8.20		
सैद्धान्तिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	94.98	12.26	2.161	0.69
	महिला शिक्षक	50	93.48	8.25		
सौंदर्यपरक मूल्य	पुरूष शिक्षक	50	79.92	9.22	2.117	2.22
	महिला शिक्षक	50	84.62	11.79		
समग्र योग	पुरूष शिक्षक	50	98.97	8.17	1.620	2.98
	महिला शिक्षक	50	94.15	8.03		

तालिका 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि,

धार्मिक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=86.04) तथा मानक विचलन 3.75 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=88.92) तथा मानक विचलन 2.06 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमशः 0.605 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 4.76 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

सामाजिक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=100.20) तथा मानक विचलन 7.75 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=96.56) तथा मानक विचलन 6.71 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमशः 1.450 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.51 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

राजनीतिक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के राजनीतिक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=82.95) तथा मानक विचलन 13.41 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=78.05) तथा मानक विचलन 9.97 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमश: 2.363 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.073 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के राजनीतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

आर्थिक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=84.96) तथा मानक विचलन 10.45 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=83.19) तथा मानक विचलन 8.20 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमश: 1.879 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 0.942 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

सैद्धान्तिक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=94.98) तथा मानक विचलन 12.26 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=93.48) तथा मानक विचलन 8.25 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमश: 2.161 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 0.694 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से कम है। अत: शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

सौंदर्यपरक मूल्य— माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के सौंदर्यपरक मूल्यों से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=79.92) तथा मानक विचलन 9.22 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=84.62) तथा मानक विचलन 11.79 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक त्रुटि क्रमश: 2.117 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.22 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के सौंदर्यपरक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों का समग्र योग का तुलनात्मक अध्ययन ज्ञात करने पर पाया कि मध्यमान (M_1=98.97) तथा मानक विचलन 8.17 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षकों का मध्यमान (M_2=94.15) तथा मानक विचलन 8.03 प्राप्त हुआ। माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की मानक

त्रुटि क्रमशः 1.620 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.98 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

मूल्य वह मार्गदर्शक शक्ति हैं जो शिक्षकों को प्रभावी बनाते हैं और समाज के मानदंडों के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। अध्ययन में हमने पाया कि पुरुष की अपेक्षा महिला शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों की स्थिति उच्च होती है। इसलिए, यह सुझाव दिया गया है कि पुरुष और महिला शिक्षकों दोनों के लिए अलग—अलग धार्मिक कोड निर्धारित किए जा सकते हैं। पुरुष शिक्षकों में महिला माध्यमिक शिक्षकों की तुलना में अधिक सामाजिक मूल्य होते हैं। इसलिए, योजनाकारों और प्रशासकों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे माध्यमिक शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति में अच्छे स्कूल समुदाय संबंध स्थापित करें। महिलाओं में सामाजिक कौशल विकसित किया जा सकता है। पुरुष शिक्षकों में उनके समकक्षों की तुलना में अधिक राजनीतिक मूल्य होते हैं। इस प्रकार, यह सुझाव दिया गया है कि महिला शिक्षकों को भी नेतृत्व भूमिका के लिए प्रशिक्षण दिया जा सकता है। पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। इस बिंदु पर विचार करने और इन मूल्यों को शामिल करने के संबंध में मौजूदा पाठ्यक्रम में और सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए इसे उच्च अधिकारियों के ध्यान में लाया जा सकता है। पुरूष शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों का अधिक विकास पाया जाता है जबकि महिला शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्य पुरूषों की अपेक्षा कम विकसित होते हैं। पुरूष शिक्षकों में सौंदर्यपरक मूल्यों का कम विकास पाया जाता है जबकि महिला शिक्षकों में सौंदर्यपरक मूल्य पुरूषों की अपेक्षा अधिक विकसित होते हैं। इस बिंदु पर विचार करने और इन मूल्यों को शामिल करने के संबंध में मौजूदा पाठ्यक्रम में सुधार और सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए इसे उच्च अधिकारियों के ध्यान में लाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ—

- चम्याल, देवेन्द्र सिंह, भीमा मनराल (2020) 'वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' इण्डियन जरनल ऑफ साइकमैट्रिक एण्ड एजूकेशन, 42 (2), 147-151
- कुमारी (2001) 'शहरी पुरुष शिक्षक एवं ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के मूल्यों की तुलना' शोध प्रबंध, सार इंटरनेशनल, वॉल्यूम—45, (2—सी), 1476—80
- कुमारी, एल. वी. (2005) 'पुरुष और महिला शिक्षकों ने सैद्धांतिक मूल्य और सम्बद्धता' इंटरनेशनल जरनल ऑफ एप्लाइड रिसर्च 2021; 7(1): 400-403
- कुमार (2016) 'हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षिका तीक्ष्णता के मध्य मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन', एम.एड. शिक्षा में निबंध, शिमला: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय।

Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

- शर्मा, मीना (2005) 'शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर , नैतिक मूल्यों व आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
- शर्मा, उदयवीर (2015) 'माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मध्य मूल्यों का अध्ययन' जर्नल ऑफ बिलीफ्स एंड वैल्यूज, 24 (1), 75—88
- शौकीन बिलाल अहमद (2017) 'शिक्षक और मूल्य शिक्षा—एक अन्वेषणात्मक अध्ययन, Inquiry 2016-17 Vol.-37
- यादव, विश्वजीत एवं सिकंदर मंदिरा (2021) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए मूल्य संवर्धन प्रथाओं का एक अध्ययन' इंटरवूवन: एन इण्टरडिसिप्लिनरी जरनल ऑफ नवरचना यूनिवर्सिटी, वैल्यूम-4, इश्यू—1